"एक ऐतिहासिक स्थान जोशीमठ, बद्रीनाथ को जाने वाले मोटर मार्ग पर एक पहाड़ की चोटी पर स्थित है। चीन के आक्रमण के बाद उस स्थान का महत्व इस लिये बढ़ गया है, क्यों कि वह कई महत्व पूर्ण मार्गों के संगम पर है।

जोशीमठ शहर हिमनाद के कचरे के टीले कूड़ा करकट पर खड़ा है। जो कि अभी तक पूरी तरह स्थिर नहीं हो पाया है। पहाड़ के नीचे गंगा की दो महत्वपूर्ण सहायक नदियों (अलकनन्दा तथा धौली) का संगम है। इससे भूस्खलन की प्रक्रिया शुरू हुई है और इतनी तेजी से बढ़ रही है कि नदी का तट कटने लगा है। जिससे सारे पहाड़ को खतरा है। सामने के तट से यह स्पष्ट दिखाई देता है कि कई बहुत बड़े चट्टान तट के ऊपर लटके हुए हैं और कि अनियमित वर्षा से ये कभी भी नदी में लुढ़क सकते हैं इस बात को ध्यान में रख कर हमें १९७० की बाढ़ नहीं भूलनी चाहिए।" बेलाकुची का बाजार १९७० की अपूर्व बाढ़ में बह गया। कई बसें व पर्यटक भी बह गये थे। नदी में इतनी मिट्टी बह गयी थी कि ३५० किलोमीटर की दूरी पर गंगा के नहर में १० मील लम्बा हिस्सा उस मिट्टी के जमने से बन्द हो गयी थी। उसे साफ करने में इतना समय लगा कि उस साल में सिंचाई का पानी नहीं मिलने से पश्चिम उत्तर प्रदेश की फसल में बहुत कमी आयी"। (न्यू साइन्टिस्ट लन्दन १४-८-७५)

इस बात को भी याद रखनी चाहिए कि अलकनन्दा पर कई बांध बनाने की योजनायें बन रही हैं। नदी में ज्यादा मिट्टी के बहने से उनके लिये भी खतरा हो सकता है।

यह जांचना बहुत जरूरी है क्या तेजी से बहती हुई नदियों से नदी के तट कट रहे हैं। उस हालत में क्या नदियों के किनारे-किनारे कंक्रीट स्लैब लगाने से यह प्रक्रिया कुछ समय रुक सकती है?

ज्यादातर लोग समझते हैं कि सड़कों के साथ-साथ आधुनिकता तथा समृद्धि आती है, लेकिन हिमालय के पहाड़ों और वनों के लिये तथा उनमें रहने वाले लोगों के लिये ये सड़कें बहुत चिन्ता का विषय बन गयी है। इन सीमावर्ती सड़कों पर बहुत ज्यादा सुरंग(   ) का उपयोग हुआ है। इससे नयी दरारें बन गई हैं। मिट्टी ढीली हो गई है और स्थान स्थान पर भूस्खलन हुआ है। इसके सिवा कई जगहों पर सड़क को रोकने वाले आवश्यक दिवालों की कमी पाई गयी है। सार्वजनिक निर्माण विभाग का डाक बंगला उसका एक उदाहरण है।

इधर हम बराबर बच्चियों को लकड़ी की गठरी लेती हुई देखते हैं। बिजली या कैरोसीन से तथा अन्य साधनों के अभाव में इधर मुख्य ईंधन लकड़ी है। यह भी वनों के लिये एक बड़ा खतरा है। " वनों के कटने से लोगों का कष्ट बढ़ गया है। एक बार जब वन बर्बाद हो जाता है। तब शेर के डर से भूस्खलन का डर ज्यादा प्रबल होता है। वनों के न कटने से मैदान के लोगों को भी कष्ट होता है। बांधों के पीछे तालाबों

क्रमशः-२-

में मिट्टी के भरने से सिंचाई तथा बिजली की योजनाओं में अनिश्चितता आती है और [illegible] बाढ़ का खतरा भी बढ़ जाता है (न्यू साइन्टिस्ट लन्दन) सड़कों के बनने के बाद ज्यादा पेड़ कटने लगे हैं । पेड़ों का नाजायज कटान अब भी चल रहा है । जब तक इसके ईंधन के अन्य स्रोत उपलब्ध नहीं होते । तब तक उसे रोकना भी असम्भव है । यह ईंधन इतनी सस्ती होनी चाहिये कि वह हर गांव वाले की क्रय शक्ति में बैठ सके । ।

एक वनस्पति विशेषज्ञ डा० वीरेन्द्र कुमार जो हिमालयों में काफी भ्रमण कर चुके हैं । लिखते हैं । अब तक होने वाले वन कटान की वजह से कई हिमनाद तीन से लेकर पांच किलो मीटर पीछे हट गये हैं । वह मानते हैं कि यदि हिमालयों की सब [illegible] नदियों के स्रोत में पेड़ों को काटने पर सम्पूर्ण कानूनी प्रबन्ध न हो तो देश के जल संस्थान के लिये बड़ा खतरा होगा । पेड़ लगाना अति आवश्यक है,लेकिन उससे होने वाला लाभ शायद बीस वर्षों के बाद ही प्रकट हो सकेगा । मिट्टी को हर पौधों से ढकना । [illegible] जोशीमठ के लिये सबसे आवश्यक है,लेकिन जोशीमठ के तत्कालिक आवश्यकताओं के महत्व [illegible] को देखते हुए फौरन कई और आवश्यक कदमों को उठाने की जरूरत है मुख्यतः [illegible] दीवाल बनाना वर्षा के पानी को बहाने के लिये पक्की नहर बनाना ताकि भूमि का [illegible] कटाव रुक जाय । वर्षा के पानी की वजह से कई जगहों पर नयी निर्मित सड़कें ढल रही हैं ।

पहाड़ी कृषि सीढ़ीनुमा खेतों पर होती है । कई बार दीवाल न लगाकर 30 अंश के ढाल पर भी कृषि होती है । इससे भी मिट्टी का कटाव बढ़ जाता है । ऐसे ढालों पर लोगों को फल के बगीचे लगाने का सुझाव देना उचित होगा । इससे लोगों को आर्थिक लाभ ही नहीं मिलेगा,बल्कि मिट्टी के स्थायित्व को बढाने में भी लाभ होगा ।

गोपेश्वर
३ मई १९७६

— चण्डीप्र भट्ट